सोवियत संघ से विशेष सहायता प्राप्त विद्युत परियोजनायें

2625. **श्री राम जेठमलानी :**
श्री वीरेन जे० शाह :

क्या **विद्युत मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि गत वर्षों में भूतपूर्व सोवियत संघ की वित्तीय सहायता से विभिन्न विद्युत परियोजनायें स्थापित करने का निर्णय लिया गया था;

(ख) यदि हां, तो उन परियोजनाओं के नाम क्या हैं जिनका निर्माण कार्य अब भी चल रहा है और उनकी मौजूदा लागत के बारे में क्या आकलन है;

(ग) क्या यह सच है कि सोवियत संघ के विघटन के बाद से इन परियोजनाओं का निर्माण कार्य ठप्प हो गया है;

(घ) यदि हां, तो वर्ष 1992–93 तक इन परियोजनाओं पर कुल कितनी राशि व्यय की जा चुकी है और उस पर सरकार प्रतिवर्ष ब्याज के रूप में कितनी राशि अदा कर रही है;

(ङ) क्या सरकार ने इन परियोजनाओं के निर्माण की लागत को पूरा करने के लिये अन्य अन्तर्राष्ट्रीय स्रोतों से संपर्क किया है ; और

(च) दिसम्बर, 1992 तक किन-किन परियोजनाओं की निर्माण लागत को पूरा करने के लिये सरकार ने व्यवस्था कर ली है ?

विद्युत मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री पी.वी. रंगैया नायडू) : (क) से (च) भारत में ताप विद्युत परियोजनायें अधिष्ठापित किये जाने के लिये तत्कालीन सोवियत यूनियन के साथ सात समझौतों पर हस्ताक्षर किये गये थे । इनमें विन्ध्याचल चरण–1 ताप विद्युत परियोजना, कहलगांव ताप विद्युत परियोजना, विन्ध्याचल चरण–2, टिहरी जल विद्युत काम्पलैक्स, मैथान ताप विद्युत परियोजना, कायामकुलम ताप विद्युत परियोजना, मंगलौर ताप विद्युत परियोजना और विन्ध्याचल बीना-नागदा पारेषण प्रणाली शामिल है । इनमें से विन्ध्याचल सुपर ताप विद्युत परियोजना चरण–1 पूरी हो गई है और कहलगांव सुपर ताप विद्युत परियोजना अंतिम चरण में है जबकि टिहरी काम्पलैक्स में कुछ कार्य किया गया है । टिहरी समेत शेष परियोजनाओं के लिये ऋण समझौतों हेतु रूसी परिसंघ के साथ पुनः बातचीत करनी पड़ सकती है । 1977 के बाद जिन परियोजनाओं के लिए समझौतों पर हस्ताक्षर किये गये थे इनके लिये ऋण सोवियत यूनियन राज्य से राज्य सहायता के आधार पर उपलब्ध था तथा वार्षिक ब्याज की दर 2.5% थी और इसका भुगतान 20 वर्षों में किया जाना था जिसमें तीन वर्ष की छूट की अवधि भी शामिल थी ।

दिल्ली विद्युत प्रदाय संस्थान को भारी घाटा

2626. **श्रीमती सुषमा स्वराज :**
श्री राम जेठमलानी :

क्या **विद्युत मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि दिल्ली विद्युत प्रदाय संस्थान द्वारा चालू वित्तीय वर्ष 1992–93 के दौरान भी भारी आर्थिक घाटा वहन किये जाने की संभावना है;

(ख) यदि हां, तो इस घाटे की अनुमानित राशि कितनी है ;

(ग) क्या यह भी सच है कि दिल्ली में विद्युत पारेषण के दौरान होने वाली हानि का अनुपात राष्ट्रीय अनुपात की तुलना में अधिक है जबकि क्षेत्रफल के अपेक्षाकृत कम होने के कारण यह अनुपात कम होना चाहिये;

(घ) क्या यह भी सच है कि दिल्ली विद्युत प्रदाय संस्थान की अनेक